दक्षिण दिनाजपुर की कुष्मांडी उन शिल्पकारों का वास स्थान है जो लकड़ी के मुखौटे बनाते हैं जिन्हें स्थानीय लोग मुख कहते हैं। यह मुखौटा दिनाजपुर के विभिन्न जनजाति समूहों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले गोमिरा नृत्य के साथ सुदृढ़ रूप से जुड़ा हुआ है जहाँ नृत्यकर्ता ये मुखौटा पहनते हैं। निर्भीक राक्षसी आकृति इन मुखौटों की विशेषता है। लकड़ी के बने गोमिरा मुखौटे दो विशिष्ठ नृत्य रूपों गोमिरा और राम बनवास के धोतक हैं। अधिकांश गोमिरा मुखौटों में मुख्य चरित्र की परिधि के इर्द गिर्द बनाए गए सहायक चरित्र होते हैं। प्रारंभ में हिंदू पौराणिक गाथाओं के अनुसार ये मुखौटे असली लकड़ी जैसे नीम के पेड़ की लकड़ी से बनाए जाते थे। अधिकांश शिल्पकार गम्हार पेड़ (गमेलिना अर्बेरिया) की लकड़ी का प्रयोग करते हैं। स्थानीय रूप से उपलब्ध आम, पाकड़, कदम्ब, सागौन इत्यादि जैसे सस्ती लकड़ियां भी प्रयोग में लाई जाती है। इन मुखौटों का प्रयोग घर की सजावट में भी किया जाता है। वर्ष 2018 में कुष्मांडी का लकड़ी का मुखौटा को भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेत प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। पश्चिम बंगाल डाक सर्किल इस रंगबिरंगे मुखौटे पर एक विशेष आवरण जारी कर जश्न मनाना चाहता है।

Kushmandi of Dakshin Dinajpur is home to crafts persons who are involved in making wooden masks locally called as Mukha. It is inexorably linked with the **"Gomira Dance"** performed by various ethnic groups of Dinajpur, where the performers wear the masks. Bold demonic look is the characteristic feature of the masks. The wood crafted Gomira masks represent the characters of the two distinct forms of dance - the Gomira and the Ram-Vanwas. Most Gomira face masks have subsidiary characters crafted along the periphery of the main character. Initially the masks were made from 'pure woods' such as wood from Neem tree, as per Hindu mythology. Mostly the artists use wood from "gamar tree" (Gmelina arborea). Locally available and Cheaper wood such as mango, pakur, kadam, teak, etc. are also used. Masks are also used for household decoration. In 2018 "Wooden Mask of Kushmandi" was granted the geographical indication certificate by Government of India. West Bengal Postal Circle would like to celebrate the colourful mask by releasing a Special Cover on it.

भारतीय डाक India Post

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, पश्चिम बंगाल सर्किल, डाक विभाग द्वारा अनुमोदित
Approved by: Chief Post Master Gen15eral, West Bengal Circle, Department of Posts
Code No. WB/   /2021

स्वच्छ भारत — एक कदम स्वच्छता की ओर